International Indexed & Referred Research Journal, March, 2012. ISSN- 0975-3486, RNI-RAJBIL 2009/30097;VoL.III *ISSUE-30

शोध पत्र- हिन्दी

'गबन' एक सामाजिक उपन्यास

* वाघ भावनाबहन जे.

* प्राध्यापक, सरकारी विनयन एवं वाणिज्य, कॉलेज, समी

March, 2012

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई सन् 1890 शनिवार के दिन बनारस से पास एक लमही गाँव में हुआ था। उनके पिता काना 'अबायबराय' और माता का नाम आनंदीदेवी था। प्रेमचन्द का मुल नाम ' धनपतराय' रखा था और उनके ताउने उन्हे ' नवाब' नाम दिया था। प्रेचन्द्र का संपूर्ण साहित्य संसार लोककल्याण की भावना से ओतप्रोत है। राष्ट्र समाज एवं व्यक्ति की हर समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत कर उसके निवारण के लिए उचित उपाय भी बताये है। प्रस्तुत उपन्यास 'गबन' का रचनाकाल सन् 1931 के आसपास का है। यानी जब हिन्दुस्तान अंग्रेजी शासन का गुलाम था। उस समय साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से जनता को जागृत करते रहे हैं। 'गबन' में भी ऐसा ही प्रयास देखने को मिलता है।

गबन उपन्यास का कथासार :-

प्रेमचन्द्र रचित ' गबन' उपन्यास का बहुत बड़ा भार नारी स्वाभाविक आभूषण प्रेम मानव की भोगविलासोन्मुख प्रवृति से जुडा हुआ है। 'जालपा को गहनो से जितना प्रेम था, उतना कदाचित संसार की और किसी वस्तु से न था, और उसमें आश्चर्य की कौन सी बात थी? जब वह तीन वर्ष की अबोध बालिका थी, उस वक्त उसके लिए सोने के चूडे बनवाए गए थे। दादी जब उसे गोद में खिलाने लगती, तो गहनों की ही चर्चा करती। तेरा दूल्हा तेरे लिए बड़े सुंदर गहने लाएगा। ठुमुक–ठुमुककर चलेगी। '' [1]

नारी की आभूषण प्रियता से चार परिवारों को समाहित किया गया है। न्यायालय , ईश्वर, डॉक्टर, रिश्वतखोरी, धार्मिक पाखण्ड और पूंजीवाद शोषक के सम्बन्ध में यथास्थान लेखक द्वारा व्यक्त विचार इस संदर्भ में किया है। एक तरफ विलासिता होती है तो अंत में उब है विलासिता के प्रति। इसके कारण ही 'जालपा' सारी प्रसाधन सामग्री गंगा में फेककर आत्मतृष्टि का अनुभव करती है।

ग्राम जीवन के चित्रण की दृष्टि से 'गबन' बहुत पीछे की रचना सिद्ध होती है और सच्ची बात यह है कि वह उनके पूर्ण प्रकाशित उपन्यास कृष्णा का संशोधित रुप है। ''[2] इस उपन्यास में प्रेमचन्द्रजी ने नर–नारी के लिए दोहरे मापदण्डो पर चिन्ता व्यक्त की है।

गबन उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ :-

1. आभूषण प्रिय नारियाँ :- जालपा को गहनों से जितना प्रेम था, उतना कदाचित संसार की किसी वस्तु से न था और उसमें आश्चर्य की कौन सी बात थी? जब वह तीन वर्ष की अबोध बालिका थी, उस वक्त उसके लिए सोने के चूडे बनवाये गये थे। उसकी दादी जब उसे गोद में खिलाने लगती तो गहनों की ही चर्चा करती तेरा दूल्हा तेरे लिए बडे सुंदर गहने लायेगा।

इस आभूषण मंडितसंसार में पली हुई जालपा का यह आभूषण प्रेम स्वाभाविक ही था। जालपा की शादी में चढाव में चन्दहार नहीं आता है। तब से जालपा त्योरी चढाकर रहती है। सारा घर समझा कर हार गया, पडोसी भी समझाकर हार गई, दीनदयाल आकर समझा गये, पर जालपाने रोग शैया न छोडी। उसने अब घर में किसी पर विश्वास नहीं है यहाँ तक की रमा से भी उदासीन रहती है। वह कुछ पूछता तो दो–चार जली कटी सुना देती। जालपा आभूषण न मिलने परवह अपना घर छोड़ने के लिए भी तैयार हो जाती है। एक दिन रमानाथ गंगू के यहाँ से हार और शीशफूल दोनो चीजे लेकर घर पर आता है। जालपा दोनों आभूषणों को देखकर निहार हो गयी। उसने हार गले में पहना शीशफूल जुडे में सजाया और सर्पसी उन्मत होकर बोली 'तुन्हें आर्शीवाद देती हूँ। ईश्वर तुम्हारी सारी कामनाएँ पूरी करें।

जालपा की सास रामेश्वरी को भी आभूषण प्रिय लगते थे। परंतु पति की आय ही इतनी न हुई, जब से घर की जिम्मेदारी उनके सिर पर आई तभी से उसकी सारी लालसाएँ एक–एक घूल में मिल गई। उसने उन आभूषण की और आँख हटा ली। जालपा की माता मानकी भी आभूषण प्रिय नारी है। जालपा के चढावा में चन्द्रहार नहीं होता तब मानकी हार उतारकर नहीं देती है। रतनी की शादी बूढे वकील साहब के साथ होती है। वह रतन को गहने ला देते थे, और रतन अपने ससुराल में खुश थी।

2. अनमेल विवाह की समस्या :-

'गबन' उपन्यास में रतन तथा वकील साहब के अनमेल विवाह हुए है। रतन का विवाह बूढे वकील साहब के साथ होता है। लेकिन फिर रतन विद्रोह नहीं करती क्योंकि

आर्थिक विषमता तथा निर्धनता से उनका व्यक्तित्व कुण्ठित हो जाता है। माता विहीन रतन जो अपने मामा पर निर्भर थी, अपने विवाह पर प्रकाश डालती है '' कह नहीं सकती, इनसे कुछ ले लिया या इनकी सज्जनता पर मुग्ध हो गये।'' 'गबन' उपन्यास मे धन का असन्तुलन और निर्धनता ही इन अनमेल विवाह का कारण है।

3. वेश्या समस्या :–

'गबन' उपन्यास में गौणपात्र जोहरा, वेश्या के रुप में उपस्थित होती है। इस जोहरा का पुलिस ने सरकारी गवाह बने रमानाथ का दिल बहलाने के लिए नियुक्त किया था। जालपा की त्याग वृत्ति से जोहरा का हृदय परिवर्तन होता है। जोहरा जालपा के साथ गाँव रहने के लिए देवीदीन और जग्गो की बहू के रुप में रहती है।

4. विधवा की समस्या :– 'गबन' में रतन को एक विधवा के रुप में उपस्थित किया गया है। उसके पति वकील इन्द्रभूषण समृद्ध थे। उनके जीवन–काल में रतन ठाठ–बाट के साथ रहती थी। किन्तु, उसके मरने के बाद सम्पति पर उनके भतीजे मणिभूषण उसका उत्तराधिकार हो जाता है। इतना ही नहीं रतन के लिए अब अपना घर पराया जैसा लगता है। रतन की सारी संपति मणिभूषण हडप लेता है। रतन को मणिभूषण पेट भरने के लिए थोडा अन्न और वस्त्र भी देता है। रतन को अपनी इस स्थिति से विद्रोह होता है और वह कहती है– '' है न जाने किसी पापीने यह कानून बनाया था कि पति के मरते ही हिन्दुनारी इस प्रकार स्वत्व –वंचिता हो जाती है।''

'गबन' उपन्यास की भाषा शैली :–

'गबन' उपन्यास की भाषा में हिन्दी गद्य क्षेत्र में प्रचलित सभी प्रकार की शैलियों का निर्वाह सफलतापूर्वक हुआ है। इसमें ठेठ हिन्दी का प्रतिष्ठित रुप भी हमें स्पष्ट रुप से देखने को मिलता है। इस में जगह–जगह पर पात्रानुकूल, परिस्थितिकूल उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी तथा स्थानीय ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि 'गबन' उपन्यास में तथ्य निरुपणशैली, संभाषण शैली, आलोचनाशैली, समीक्षाशैली, व्यंग्यात्मक शैली तथा प्रबोद्यशैली आदि के अनेक उदाहरण हमे देखने को मिलते है।

उपसंहार :

'गबन' उपन्यास में व्यक्ति की समस्यओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके साथ ही सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत कर उद्देश्य की दृष्टि से 'गबन' उपन्यास कला का एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करता है, यह कहने में हमें कोई संकोच नहीं हो सकता।

संदर्भ ग्रंथ

1. गबन : मुंशी प्रेमचन्द्र, पृ 401 2. प्रेमचन्द्र : एक युगः डॉ. रामविलास शर्मा, पृ. 221 3. गबन : संपादक, डॉ. हरिहर प्रसार गुप्त, पृ. 43 4. हिन्दी उपन्यास समाजशास्त्रीय विवेचन, डॉ. चण्डीप्रसाद जोशी, पृ. 121 5. प्रेमचन्द्र के उपन्यासों में समसामयिक परिस्थितियों का प्रतिफलन डॉ, सरोज प्रसाद, पृ. 236